

**कैम्पस अपडेट****थिएटर से व्यक्तित्व विकास की सीख देगी कार्यशाला 'उन्मेष'**

बीकानेर। स्वामी केशवानंद राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय (एसकेआरएयू) तथा मलंग फोल्क फाउंडेशन के संयुक्त तत्वावधान में गुरुवार को थिएटर आधारित व्यक्तित्व विकास कार्यशाला 'उन्मेष' का उद्घाटन मानव संसाधन विकास सभागार में हुआ। रजिस्ट्रार डॉ. देवाराम सैनी ने कहा कि थिएटर के विभिन्न आयामों से व्यक्तित्व के अनेक पहलुओं को समझने का अवसर मिलता है। अनुसंधान निदेशक डॉ. एन.के. शर्मा ने प्रतिभागियों को प्रोत्साहित करते हुए कहा कि कला मनुष्य के जीवन को पूर्णता की ओर ले जाती है। मानव संसाधन विकास निदेशक डॉ. एच.एल. देशवाल ने भी विचार रखे। कार्यशाला संयोजक डॉ. सीमा त्यागी ने रूपरेखा प्रस्तुत की। थिएटर प्रशिक्षक अजहर गौड़ और प्रो. आरती उपाध्याय ने प्रतिभागियों को थिएटर के विभिन्न आयामों का बुनियादी प्रशिक्षण दिया। अतिथियों ने कार्यशाला के पोस्टर का विमोचन भी किया। डॉ. त्यागी ने बताया कि प्रो. आरती उपाध्याय विद्यार्थियों पर थिएटर आधारित प्रशिक्षण के मनोवैज्ञानिक प्रभावों का अध्ययन भी करेंगी। कार्यक्रम में विभिन्न अतिथि, प्रशिक्षक और प्रतिभागी उपस्थित रहे।

# अभिनय के मंच से व्यक्तित्व निखारने की पहल, 'उन्मेष' कार्यशाला शुरू

बीकानेर @ पत्रिका. अभिनय सिर्फ मंच पर किरदार निभाने का माध्यम नहीं, बल्कि खुद को समझने, भावनाओं को अभिव्यक्त करने और व्यक्तित्व को निखारने का जरिया भी है। इसी सोच के साथ स्वामी केशवानंद राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय (एसकेआरएयू) और मलंग फोक फाउंडेशन के संयुक्त तत्वावधान में थिएटर आधारित व्यक्तित्व विकास कार्यशाला 'उन्मेष' का गुरुवार को आगाज हुआ।

इसका उद्घाटन विश्वविद्यालय के रजिस्ट्रार डॉ. देवाराम सैनी ने किया। अनुसंधान निदेशक डॉ. एनके शर्मा ने प्रतिभागियों का उत्साहवर्धन करते हुए कहा कि कला मनुष्य के जीवन को पूर्णता की ओर ले जाती है। मानव संसाधन विकास विभाग के निदेशक डॉ. एचएल देशवाल ने भी अपने विचार व्यक्त किए।



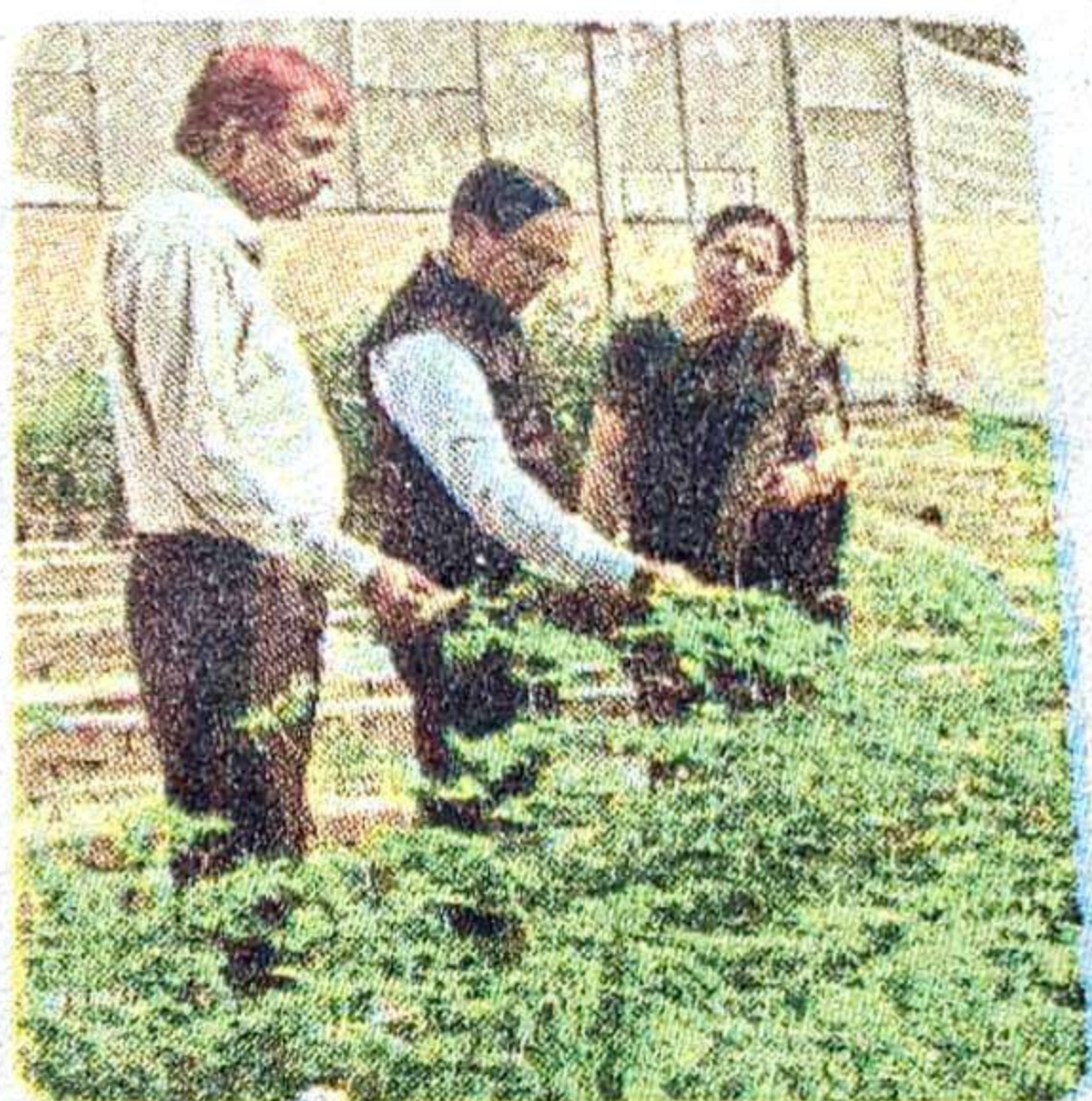
## अभिनय के अभ्यास से निखरेगा आत्मविश्वास

कार्यशाला संयोजक एवं सहायक प्रोफेसर डॉ. सीमा त्यागी ने आयोजन की रूपरेखा प्रस्तुत की। थिएटर प्रशिक्षक अजहर गौड़ और प्रो. आरती उपाध्याय ने प्रतिभागियों के समूह को

थिएटर आधारित व्यक्तित्व विकास का प्रशिक्षण दिया। इस अवसर पर राजेंद्र खत्री, प्राकृतिक चिकित्सा केंद्र प्रभारी देवाराम काकड़, मलंग फोक फाउंडेशन की कार्यक्रम समन्वयक निकिता तिवारी, सोहम गुप्ता, सहायक थिएटर प्रशिक्षक और प्रतिभागी मौजूद रहे।

# उन्नत बीज उत्पादन में भागीदार बनेंगे किसान, खेती को लाभकारी बनाने पर जोर

श्रीगंगानगर. खेती को अधिक लाभकारी बनाने के लिए किसानों तक उन्नत कृषि तकनीक पहुंचाने के साथ उन्हें बीज उत्पादन में भी भागीदार बनाया जाएगा। इससे किसानों को नई तकनीकों और नवाचारों को अपनाने का अवसर मिलेगा, वहीं स्थानीय स्तर पर उन्नत बीजों की उपलब्धता बढ़ाने में भी मदद मिलेगी। इसी उद्देश्य से एसकेआरएयू के कुलगुरु राजेंद्र बाबू दुबे ने शुक्रवार को पदमपुर स्थित कृषि विज्ञान केंद्र का दौरा कर विभिन्न गतिविधियों की समीक्षा की। दुबे ने कृषि विज्ञान केंद्र की ओर से संचालित कार्यों की जानकारी ली और विभिन्न इकाइयों का निरीक्षण किया। उन्होंने अधिकारियों को निर्देश दिए कि किसानों की सक्रिय सहभागिता से उन्नत किस्मों के बीज उत्पादन की गतिविधियों को बढ़ावा दिया जाए। किसान सहभागी पद्धति से बीज उत्पादन होने पर किसानों की स्थानीय



जरूरतें पूरी करने के साथ उन्हें कृषि क्षेत्र में नवाचार करने का अवसर भी मिलेगा। इस दौरान कृषि अनुसंधान केंद्र के क्षेत्रीय निदेशक डॉ. एनके शर्मा ने किन्नू उत्पादन और मृदा सुधार से जुड़े कार्यों पर विशेष जोर दिया। इस अवसर पर कृषि विज्ञान केंद्र की प्रभारी डॉ. सीमा चावला, उद्यान विशेषज्ञ डॉ. नवल कम्बोज तथा मृदा विशेषज्ञ डॉ. राजवीर सिंह चौधरी उपस्थित रहे।

श्रीगंगानगर के सरेंद्र डेंटल कॉलेज

# पदमपुर में कृषि विज्ञान केन्द्र का निरीक्षण, गतिविधियों की ली जानकारी, अधिकारियों को दिये दिशा निर्देश यहां की मिट्टी सोना पैदा करने वाली : कुलगुरु दुबे

पदमपुर (श्रीगंगानगर)।

स्वामी केशवानंद राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय, बीकानेर के कुलगुरु प्रोफेसर अरुण कुमार दुबे ने कृषि अनुसंधान निदेशक डॉ. एन.के. शर्मा के साथ कृषि विज्ञान केन्द्र पदमपुर का सघन दौरा किया। इस दौरान उन्होंने केन्द्र द्वारा संचालित विभिन्न प्रसार, अनुसंधान और तकनीकी गतिविधियों का विस्तृत जायजा लेते हुए वैज्ञानिकों एवं कार्मिकों के कार्यों की भूरि-भूरि प्रशंसा की तथा उनका उत्साहवर्धन किया।

## गतिविधियों एवं बीज उत्पादन की समीक्षा

निरीक्षण के दौरान केन्द्र की वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं प्रभारी डॉ. सीमा चावला ने कुलगुरु महोदय को वर्ष 2026-27 के दौरान संचालित प्रसार गतिविधियों, किसान प्रशिक्षणों, अग्रिम पंक्ति प्रदर्शनों तथा खरीफ व रबी सीजन में तैयार की गई विभिन्न फसलों के बीज उत्पादन का विस्तृत ब्यौरा प्रस्तुत किया। इस अवसर पर केन्द्र के वैज्ञानिक डॉ. नवल एवं डॉ. राजवीर भी उपस्थित रहे। निदेशक अनुसंधान डॉ. एन.के. शर्मा ने केवीके के प्रयासों को सराहते हुए कहा कि उन्नत तकनीक और प्रमाणित बीजों को अंतिम छोर के किसानों तक पूरी



विश्वसनीयता के साथ पहुंचाना ही कृषि विस्तार का मूल लक्ष्य है।

## किसान सहभागिता से बीज उत्पादन पर विशेष बल

कुलगुरु प्रो. दुबे ने अपने संबोधन में केन्द्र के वैज्ञानिकों को निर्देश दिए कि वे बीज उत्पादन के कार्य में स्थानीय किसानों की सक्रिय सहभागिता सुनिश्चित करें। उन्होंने कहा कि जब प्रगतिशील किसान स्वयं बीज उत्पादन शृंखला से जुड़ेंगे, तो न केवल उनकी आय में इजाफा होगा बल्कि पूरे क्षेत्र में उच्च

गुणवत्ता वाले प्रमाणित बीजों की उपलब्धता भी सहज हो सकेगी। कुलगुरु ने कहा कि यहां की माटी बेहद उपजाऊ है जो सोना पैदा करती है। उन्होंने केन्द्र पर स्टाफ की वर्तमान कमी के बावजूद बेहतरीन प्रबंधन और व्यवस्थाओं की सराहना की। प्रो. दुबे ने केन्द्र के आधुनिक बीज संग्रहण गृह (सीड स्टोर) का गहन निरीक्षण करते हुए कहा कि वैज्ञानिक तकनीकों के अनुसार बीजों का उचित भंडारण अत्यंत आवश्यक है, ताकि उनकी अंकुरण क्षमता और शुद्धता बरकरार रहे और किसानों को समय पर उत्तम बीज मिल सके।

## प्राकृतिक खेती-पौध उत्पादन को बढ़ावा

कुलगुरु ने परिसर में स्थित विभिन्न तकनीकी प्रदर्शन इकाइयों और नर्सरी का भी अवलोकन किया। नर्सरी का निरीक्षण करते हुए उन्होंने निर्देश दिए कि सब्जियों की उन्नत पौध के उत्पादन में विस्तार किया जाए, जिससे किसान नकदी फसलों की ओर प्रेरित हों। इसके साथ ही उन्होंने रसायनों के बढ़ते प्रयोग पर चिंता जताते हुए वैज्ञानिकों से प्राकृतिक एवं जैविक खेती के मॉडल्स को किसानों के खेतों तक व्यापक स्तर पर ले जाने का आह्वान किया। दौरे के समापन पर केन्द्र की प्रभारी डॉ. सीमा चावला और वैज्ञानिक दल ने कुलपति प्रो. अरुण कुमार दुबे तथा निदेशक अनुसंधान डॉ. एन.के. शर्मा को स्मृति चिह्न एवं औषधीय पौधा भेंट कर सम्मानित किया। डॉ. चावला ने विश्वविद्यालय के शीर्ष नेतृत्व का केन्द्र पर पधारने और मार्गदर्शन प्रदान करने हेतु आभार व्यक्त किया।

(राजस्थान सरकार) के सहयोग और नवयुवक कला मंडल के तत्वावधान में आगामी 27 से 29 अक्टूबर तक नरेंद्र सिंह ऑडिटोरियम में तीन दिवसीय बहुभाषी नाट्य समारोह क्रांति गाथा आयोजित किया जा रहा है।

प्रतिदिन शाम 7 बजे से शुरू होने वाले इस समारोह में बीकानेर के इतिहास में पहली बार स्थानीय स्वतंत्रता सेनानी रघुवर दयाल गोयल के जीवन पर केंद्रित राजस्थानी नाटक मंचित होगा। समारोह प्रभारी

अक्टूबर को अमर शहीद हेमू कालानी के बलिदान पर रमेश शेवकानी लिखित व जय केशवानी निर्देशित सिंधी नाटक शहादत की प्रस्तुति होगी।

इन नाटकों में जय खत्री, नवेद भाटी, फणीश्वर खत्री, अनिल बांधड़ा, मीनू गौड़, उत्तम सिंह, रोहित वाल्मीकि, कपिल कसेरा, बिराज कुमार, जय केशवानी और कपिल देव शर्मा सहित 20 से अधिक युवा कलाकार मंच संभालेंगे। दर्शकों के लिए प्रवेश निशुल्क रखा गया है।

को भी मजबूती देगी।  
उत्तम सिंह, निर्देशक, नाटक बाबू जी

■ अमर शहीद हेमू कालानी पर



आधारित नाटक 'शहादत' आजादी के ऐसे ही गुमनाम और महान नायकों के बलिदान का पावन स्मरण है।

फणीश्वर खत्री, मुख्य सहायक निर्देशक, नाटक शहादत

# मौन साधना और सुर-ताल के बीच बंदियों ने टटोला अंतर्मन; कृषि विवि में भी सज़ा मंजूर

3/15

केंद्रीय कारागार में थिएटर टू ट्रांसफॉर्मेशन का तीसरा दिन

सिटी रिपोर्टर | बीकानेर

चारदीवारी के भीतर छाई खामोशी जब ध्यान और सुरों की लय में ढलती है, तो वह सन्नाटा नहीं बल्कि भीतर के रूपांतरण की धुन बन जाती है। कारागार विभाग (राजस्थान सरकार), मलंग फोक फाउंडेशन और एसकेआरएयू के संयुक्त तत्वावधान में चल रहे दस दिवसीय अभिनव सुधारात्मक उपक्रम थियेटर टू ट्रांस फॉर्मेशन के तीसरे दिन शुक्रवार को केंद्रीय कारागार में कुछ ऐसा ही आत्मिक बदलाव देखने को मिला।

21 से 31 अक्टूबर तक चलने वाली इस कार्यशाला का ध्येय वाक्य बंदी जीवन से अभिव्यक्ति की ओर और अभिव्यक्ति से परिवर्तन की ओर तीसरे दिन पूरी तरह धरातल पर उतरता दिखा। सत्र के दौरान प्रयागराज की सामाजिक शोधकर्ता आरती उपाध्याय ने चुनिंदा बंदियों को गहन ध्यान, शारीरिक व्यायाम, परफॉर्मेंस और साइलेंस प्रैक्टिस का सघन अभ्यास करवाया। बंदियों को नियंत्रित श्वास तकनीक (ब्रीदिंग एक्सरसाइज) के जरिए वर्षों से सीने में दबे घुटन भरे संवेगों को बाहर निकालने (इमोशन रिलीज) का सुरक्षित मार्ग सिखाया गया। साथ ही संगीत की धुनों के जरिए मन को एकाग्र करने की बारीकियां समझाईं। वहीं, सहारनपुर के रंगमंच अभ्यासी अजहर गौर ने बंदियों को अपनी देह भाषा और संवादों से चरित्र गढ़ने की व्यावहारिक सीख दी। इसके बाद टीम कृषि विवि परिसर पहुंची, जहां छात्र-छात्राओं को स्टोरीटेलिंग, शारीरिक संचालन, तात्कालिक अभिनय, संगीत और आत्मचिंतन से रूबरू कराया गया।



कला और ब्रीदिंग एक्सरसाइज से टूटती है डिप्रेशन की ग्रंथि

■ लगातार चारदीवारी में रहने से बंदियों के भीतर गंभीर अवसाद (डिप्रेशन) और आक्रामकता पनपने का जोखिम सबसे अधिक रहता है। साइलेंस प्रैक्टिस और गहरी श्वास प्रक्रियाएं पैरासिम्पेथेटिक नर्वस सिस्टम को सक्रिय कर मानसिक तनाव को घटाती हैं। वहीं थिएटर और संगीत जैसे माध्यम दबी हुई नकारात्मक भावनाओं का सुरक्षित विकास करते हैं, जिससे कैदियों में न्यूरोप्लास्टिसिटी के जरिए व्यवहारिक सुधार संभव हो पाता है।

डॉ. श्री गोपाल गोयल, आचार्य एवं विभागाध्यक्ष, मानसिक रोग एवं नशामुक्ति विभाग, पीबीएम, बीकानेर

सांसों से खुलता है आत्म-साक्षात्कार का द्वार

■ बंदियों के भीतर सबसे बड़ा अवरोध उनके अनकहे जज्बात और अपराध-बोध की घुटन होती है। तीसरे दिन हमने उन्हें ध्यान, संगीत और सांसों के जरिए खुद से रू-ब-रू कराया। जब इंसान मौन रहकर अपने भीतर झांकता है, तो उसके भीतर की उथल-पुथल शांत होती है। रंगमंच की यह तकनीक ताकत देती है। --आरती उपाध्याय, सामाजिक शोधकर्ता एवं प्रशिक्षक



सजा की अवधि को सुधार में बदलना ही लक्ष्य

■ कारागार का वास्तविक उद्देश्य केवल चारदीवारी में बंद रखना नहीं, बल्कि व्यक्ति के अंतर्मन को परिष्कृत करना है। कार्यशाला के तीसरे दिन बंदियों के चेहरे पर आया ठहराव और सकारात्मकता और ध्यान का संगम उनके जीवन में नई उम्मीद जगा रहा है। यह प्रक्रिया समाज में लौटने का संबल देगी। निरंजन शर्मा, अधीक्षक, केंद्रीय कारागार, बीकानेर



द ने समझाया, वस्त्र नहीं, जीवन की दशा और दिशा बदलता है साधु और

सुगनजी उपासरे में गूंजा सामायिक-प्रतिक्रमण



48 मिनट की सामायिक और प्रतिक्रमण से आत्मशुद्धि का विज्ञान

जैन दर्शन में 48 मिनट (दो घड़ी या एक मुहूर्त) की सामायिक मात्र पूजा-पाठ नहीं, बल्कि आत्म-अनुशासन की अनूठी साधना है। इन 48 मिनटों में श्रावक मन, वचन और काया से 32 दोषों को त्यागकर समभाव में स्थिर होता है। वहीं 'प्रतिक्रमण' का अर्थ है गलत मार्ग या दोषों से

संयम कव साधु ज बदलन दिशा ब कर्मों वे साधना संयम

# कुलगुरु ने किया कृषि विज्ञान केंद्र, लूणकरणसर का दौरा

## बीज उत्पादन व अन्य गतिविधियों का लिया जायजा

बीकानेर, (निसं)। कुलगुरु डॉ. आर.बी. दुबे ने शुक्रवार को अनुसंधान निदेशक डॉ. एन.के. शर्मा के साथ कृषि विज्ञान केंद्र, लूणकरणसर का दौरा किया। कृषि विज्ञान केंद्र के वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं अध्यक्ष डॉ. राजेश कुमार शिवरान ने उन्हें केंद्र की विभिन्न गतिविधियों और कार्यक्रमों की जानकारी दी। डॉ. शिवरान ने बताया कि केंद्र द्वारा किसानों की भागीदारी से बीज उत्पादन कार्यक्रम संचालित किया जा रहा है। इसके तहत गेहूं की डब्ल्यू॥ 1270 एवं डब्ल्यू॥

1402 तथा चने की जीएनजी-2261 किस्म के बीजों का उत्पादन किया जा रहा है। कुलगुरु डॉ. दुबे ने उच्च गुणवत्ता वाले बीजों के उत्पादन पर विशेष जोर दिया। उन्होंने कहा कि बीज उत्पादन बढ़ाया जाए तथा नई एवं उन्नत किस्मों के बीज उत्पादन के लिए निरंतर प्रयास हों। बीजों की गुणवत्ता में कोई समझौता नहीं हो।

### प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित

इस अवसर पर खारी, कूजटी एवं धीरेरा गांवों के 30 किसानों को सरसों की

किस्म का 1424 के समूह अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन तथा दलहन में आत्मनिर्भरता मिशन के तहत चने की किस्म जीएनजी-2261 पर समूह अग्रिम पंक्ति समूह प्रदर्शन एवं प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में क्षेत्रीय चारा उत्पादन संस्थान, सूरतगढ़ के डॉ. बृजेन्द्र कोली ने किसानों को चारा उत्पादन के महत्व, उससे होने वाले लाभ तथा रबी मौसम में उगाई जाने वाली चारा फसलों की विभिन्न किस्मों की जानकारी दी। उन्होंने पशुपालन में गुणवत्तापूर्ण चारे

की उपयोगिता पर भी प्रकाश डाला। बायफ संस्था के छान लाल प्रजापत ने संस्था द्वारा संचालित आईटीसी मिशन सुनहरा कल परियोजना के बारे में जानकारी दी तथा परियोजना की गतिविधियों से अवगत करवाया। इस अवसर पर मृदा वैज्ञानिक भगवत सिंह खेरावत, संजय शर्मा, भंवानी शंकर तथा बायफ संस्था के सुभाष गोदारा, प्रगतिशील किसान जितेन्द्र सिंह, कालूराम, सुरेन्द्र गोदारा, राजूराम एवं ओंकारनाथ व अन्य किसान उपस्थित रहे।

# कृषि विज्ञान केंद्र पदमपुर के दौरे पर रहे कुलगुरु

श्रीगंगानगर, 23 अक्टूबर ( वि. ) । एसकेआरएयू कुलगुरु डॉ. राजेंद्र बाबू दुबे ने शुक्रवार को श्रीगंगानगर जिले के कृषि विज्ञान केंद्र पदमपुर का निरीक्षण किया। उन्होंने कृषि विज्ञान केंद्र, श्रीगंगानगर



द्वारा किए जा रहे कार्यों की जानकारी लेकर समीक्षा की तथा किसानों तक उन्नत तकनीक पहुँचाने के निर्देश दिए।

कुलगुरु डॉ. दुबे ने कहा कि किसान सहभागी मोड पर उन्नत किस्मों के बीज उत्पादन किए जाएं। इससे किसानों को नवाचार करने का अवसर मिलेगा तथा स्थानीय स्तर पर किसानों की बीजों से जुड़ी आवश्यकताएं पूरा करने में भी मदद मिलेगी। उन्होंने कृषि विज्ञान केंद्र की विभिन्न इकाइयों का निरीक्षण किया। अनुसंधान निदेशक डॉ. एन.के. शर्मा ने किन्नू और मृदा सुधार पर काम करने पर विशेष जोर दिया गया। इस अवसर पर कृषि विज्ञान केंद्र की प्रभारी डॉ. सीमा चावला, डॉ. नवल कम्बोज, उद्यान विशेषज्ञ और डॉ. राजवीर सिंह चौधरी, मृदा विशेषज्ञ उपस्थित रहे।

# उन्नत बीज उत्पादन में भागीदार बनेंगे किसान, खेती को लाभकारी बनाने पर जोर

श्रीगंगानगर. खेती को अधिक लाभकारी बनाने के लिए किसानों तक उन्नत कृषि तकनीक पहुंचाने के साथ उन्हें बीज उत्पादन में भी भागीदार बनाया जाएगा। इससे किसानों को नई तकनीकों और नवाचारों को अपनाने का अवसर मिलेगा, वहीं स्थानीय स्तर पर उन्नत बीजों की उपलब्धता बढ़ाने में भी मदद मिलेगी। इसी उद्देश्य से एसकेआरएयू के कुलगुरु राजेंद्र बाबू दुबे ने शुक्रवार को पदमपुर स्थित कृषि विज्ञान केंद्र का दौरा कर विभिन्न गतिविधियों की समीक्षा की। दुबे ने कृषि विज्ञान केंद्र की ओर से संचालित कार्यों की जानकारी ली और विभिन्न इकाइयों का निरीक्षण किया। उन्होंने अधिकारियों को निर्देश दिए कि किसानों की सक्रिय सहभागिता से उन्नत किस्मों के बीज उत्पादन की गतिविधियों को बढ़ावा दिया जाए। किसान सहभागी पद्धति से बीज उत्पादन होने पर किसानों की स्थानीय



जरूरतें पूरी करने के साथ उन्हें कृषि क्षेत्र में नवाचार करने का अवसर भी मिलेगा। इस दौरान कृषि अनुसंधान केंद्र के क्षेत्रीय निदेशक डॉ. एनके शर्मा ने किन्नू उत्पादन और मृदा सुधार से जुड़े कार्यों पर विशेष जोर दिया। इस अवसर पर कृषि विज्ञान केंद्र की प्रभारी डॉ. सीमा चावला, उद्यान विशेषज्ञ डॉ. नवल कम्बोज तथा मृदा विशेषज्ञ डॉ. राजवीर सिंह चौधरी उपस्थित रहे।

# कृषि विज्ञान केंद्र पदमपुर के दौरे पर रहे कुलगुरु, विभिन्न गतिविधियों की ली जानकारी



**श्रीगंगानगर, 23 अक्टूबर।** एसकेआरएयू कुलगुरु डॉ. राजेंद्र बाबू दुबे ने शुक्रवार को श्रीगंगानगर जिले के कृषि विज्ञान केंद्र पदमपुर का निरीक्षण किया। उन्होंने कृषि विज्ञान केंद्र, श्रीगंगानगर द्वारा किए जा रहे कार्यों की जानकारी लेकर समीक्षा की तथा किसानों तक उन्नत तकनीक पहुँचाने के निर्देश दिए। कुलगुरु डॉ. दुबे ने कहा कि किसान सहभागी मोड पर उन्नत किस्मों के बीज उत्पादन किए जाएं। इससे किसानों को नवाचार करने का अवसर मिलेगा तथा स्थानीय स्तर पर किसानों की बीजों से जुड़ी आवश्यकताएं पूरा करने में भी मदद मिलेगी। उन्होंने कृषि विज्ञान केंद्र की विभिन्न इकाइयों का निरीक्षण किया। अनुसंधान निदेशक डॉ. एन.के. शर्मा ने किन्नू और मृदा सुधार पर काम करने पर विशेष जोर दिया गया। इस अवसर पर कृषि विज्ञान केंद्र की प्रभारी डॉ. सीमा चावला, डॉ. नवल कम्बोज, उद्यान विशेषज्ञ और डॉ. राजवीर सिंह चौधरी, मृदा विशेषज्ञ उपस्थित रहे।